

विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग दशम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:-१५/११/२०२० (एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

पाठ:-सप्तमःपाठनाम सौहार्द प्रकृतेः शोभा

नाट्यांश:-

सर्वे पक्षिणः- (उच्चैः) आम् आम् – कश्चित् खगः एव वनराजः भविष्यति इति।

(परं कश्चिदपि खगः आत्मानम् विना नान्यं कमपि अस्मै पदाय योग्यं चिन्तयति,

तर्हि कथं निर्णयं भवेत् ? तदा तैः सर्वैः गहननाद्रायां निश्चिन्तं स्वपन्तम् उल्लूकं

वीक्ष्य विचारितं यदेषः आत्मश्लाघाहीनः पदनिर्लिप्तः उल्लूको एवास्माकं। राजा

भविष्यति परस्परमादिशन्ति च तदानीयन्तां नृपाभिषेकसम्बन्धिनः सम्भाराः इति।)

सर्वपक्षिणः सज्जायै गन्तुमिच्छन्ति तर्हि अनायास एव –

शब्दार्थाः-

गहननिद्रायां -गहरी निन्द में

वीक्ष्य- देखकर

पदनिर्लिप्तः -पद के लालच से रहित

सज्जायै – तैयारी के लिए

अर्थ-

सभी पक्षी-(जोर से) -कोई पक्षी ही जंगल का राजा होगा ।

(परन्तु कोई भी पक्षी अपने अलावा दूसरे किसी को भी इस

पद के लिए योग्य नहीं सोचता है तो कैसे निर्णय हो । तब उन

सभी ने गहरी नींद में निश्चित सोते हुए उल्लू को देखकर सोचा

कि यह आत्मप्रशंसा से रहित , पद की लालच मुक्त उल्लू ही

हमारा राजा होगा ।और आपस में आदेश करते हैं,तो राजा के

अभिषेक के लिए सामान लाए जाएं।)

सभी पक्षी तैयारी के लिए जाना चाहते हैं ,तभी अचानक ही.....